प्राकृत भाषा और व्याकरण के विविध आयाम

प्रधानसम्पादकः

प्रो. राधावल्लभः त्रिपाठी

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

मानितविश्वविद्यालयः

(भारतशासनमानवसंसाधनविकासमन्त्रालयाधीनः)

नवदेहली

प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी
कुलपति
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
मानित विश्वविद्यालय
(मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन)

Prof. Radhavallabh Tripathi
Vice-Chancellor
RASHTRIYA SANSKRIT SANSTHAN
Deemed to be University
(Under MHRD, Govt of India)

पुरोवाक्

प्राकृत किसी एक भाषा का नाम न हो कर एक भाषिक समुदाय है। इस समुदाय की भाषागत विविधता और परिवर्तनशीलता शोधकर्ताओं के लिये सदैव चुनौतियाँ और प्रश्न उपस्थित करती रही है। वास्तव में प्राकृत एक ऐसी धरोहर भी है, जिसका संरक्षण और संवर्धन भारतीयता की पहचान के लिये अनिवार्य है। प्राकृत भाषा में धार्मिक और दार्शनिक वाङ्मय तथा काव्यरचनाओं के अतिरिक्त वैज्ञानिक विषयों पर भी पर्याप्त साहित्य है, जिस पर गवेषात्मक कार्य अपेक्षित है।

राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान ने संस्कृत के साथ साथ पालि और प्राकृत भाषाओं तथा उनके साहित्य के अनुशीलन को प्रोत्साहन देने के लिये विगत कतिपय वर्षों में अनेक महत्त्वपूर्ण उपक्रम किये हैं। संस्थान के लखनऊ परिसर में पालिभाषा का अध्ययन केंद्र स्थापित किया गया है और जयपुर परिसर में प्राकृत भाषा का अध्ययन केंद्र कार्यरत है। दोनों ही केन्द्रों ने पालि और प्राकृत के दुर्लभ ग्रन्थों के संपादन व प्रकाशन की दिशा में महत्त्वपूर्ण कार्य किये हैं। पालि और प्राकृत के साहित्य भंडार को ई-ग्रन्थों के रूप में उपलब्ध कराने की योजना भी प्रगति पर है। साथ ही इन दोनों केन्द्रों में पालि और प्राकृत भाषाओं के प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम भी आरम्भ किये गये हैं। संस्थान के मुक्त स्वाध्याय पीठ के अंतर्गत शीघ्र ही ऐसे पाठ्यक्रम दूरस्थ शिक्षा की प्रविधि से भी चलाये जाने की योजना है। संस्थान के मुख्यालय दिल्ली में 'वाङ्मयी'-केन्द्र के अंतर्गत संस्कृत, प्राकृत व पालि तीनों भाषाओं की अनेक महत्त्वपूर्ण परियोजनाओं का प्रवर्तन किया जा रहा है। प्राकृत भाषा पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी जयपुर परिसर में तथा एक अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी बाहुबली शोध संस्थान के संयुक्त तत्त्वावधान में श्रवणबेलगोला में आयोजित की जा चुकी है। दोनों संगोष्ठियों में प्रस्तुत लेख पुस्तकाकार प्रकाशित कर दिये गये हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में संकलित निबंध संस्थान के द्वारा इसी क्रम में लखनऊ परिसर में आयोजित एक संगोष्ठी में प्रस्तुत किये गये। इनमें प्राकृत भाषा और साहित्य के विविध आयामों का विस्तृत परिदृश्य उन्मीलित हुआ है। विशेष रूप से प्राकृत की पांडुलिपियों तथा प्राकृत भाषा के व्याकरण, भाषाविज्ञान, कथात्मक साहित्य आदि के परिप्रेक्ष्य में इतर भारतीय भाषाओं - मुख्यतया संस्कृत और पालि से अन्तःसम्बन्धों के कतिपय अछूते पक्ष यहाँ संकलित लेखों में सामने आये हैं।

आशा है कि इस के प्रकाशन से प्राकृत भाषा के अध्ययनऔर अनुसंधान को व्यापक परिप्रेक्ष्य और नवस्फूर्ति मिलेगी।

7.5.2012
राधावल्लभ त्रिपाठी

56-57, Institutional Area, Janakpuri, New Delhi-110058 Ph.: (O) 28523949 (Fax) 28521948
EPABX : 28524993, 28521994, 28524995 Gram : SAMSTHAN E.Mail : rsks@nda.vsnl.net.in, rsksvc@vsnl.net

विषय-सूची

		पृष्ठ
	पुरोवाक् - प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी	*iii*
1.	दक्षिण भारत की प्राकृत पाण्डुलिपियों का संस्कृत से सम्बन्ध प्रेम सुमन जैन, श्रवणबेलगोला	1
2.	प्राकृतव्याकरणेषु संस्कृतव्याकरणस्य प्रभावः श्रीयांश कुमार सिंघइ	8
3.	प्राकृत पाण्डुलिपियों की वर्तमान स्थिति धर्मेन्द्र जैन	24
4.	प्राकृत चूर्णियों पर संस्कृत निर्युक्तियों (निरुक्तों) का प्रभाव कमलेश कुमार जैन	30
5.	प्राकृत संस्कृत विभक्तियों की तुलना ज्योतिबाबू जैन	37
6.	संस्कृत और प्राकृत का भाषावैज्ञानिक सम्बन्ध वृषभ प्रसाद जैन, लखनऊ	41
7.	प्राकृत साहित्य एवं आधुनिक शोध प्रविधियां हरिशंकर पाण्डेय	46
8.	संस्कृत-पालि-प्राकृत-कथाओं में अन्तःसम्बन्ध रजनीश शुक्ल	51
9.	प्राकृत-कोशः स्वरूप, वैशिष्ट्य एवं प्रांसगिकता वीरसागर जैन	65
10.	महाराष्ट्री प्राकृत पर संस्कृत भाषा का प्रभाव महावीर प्रसाद शास्त्री	70
11.	भास प्रणीत चारुदतम् की मागधी प्राकृत पर संस्कृत का प्रभाव सुदर्शन मिश्र	76

संस्कृतप्राकृतयोरिति ज्ञायते। उपसर्गो हि कुत्रचिद् धात्वर्थं प्रबाध्यार्थं बोधयति कुत्रचिच्च धात्वर्थमेवानुसरति कुत्रचिच्च धात्वर्थे वैशिष्ट्यमुत्पादयति। अवहरइ > अपहरति। अणुहरइ (अनुहरति)। परिहरइ (परिहरति)। आहरइ (आहरति)। पहरइ (प्रहरति)। विहरइ (विहरति)। उवहरइ (उपहरति)। किञ्च, अपसरति > ओसरइ अवसइ। पराजयते > पराजिणइ। अनुजानाति > अणुजाणइ। अनुमतिः > अणुमई। अवतरति > ओअरइ। निर्माल्यम् > निम्मल्लं ओमल्लं। दुर्नयः > दुन्नओ। अभिगमनं > अहिगमणं। अभिहन्ति > अभिहणइ। विकुर्वति > विकुव्वइ। अधिरोहति > अहिरोहइ। सुकरम् > सुअरं। उद्गच्छति > उग्गच्छइ। व्यतिक्रान्तः > वइक्कंतो। अत्यन्तम् > अच्चंतं। निवेशः > णिवेसो। प्रतिकारः > पडिआरो। प्रतिष्ठा > पतिट्ठा, परिट्ठा। परिवृत्तः > परिवुडो। परिघः > पलिघो। किमपि > किमवि कोवि कोइ। उपाध्यायः > उज्झायो ओज्झायो, उवज्झायो। आचान्तः > आयान्तो।

द्वयोः वाक्ययोः शब्दयोर्वाः संयोजनादिषु कानिचिदव्ययपदानि प्रयुज्यन्ते तानि समुच्चयबोधकत्वेन ज्ञेयानि। प्राकृते खलु तानि सन्तीमानि - अह अहो (अथ), य (च) उद (उत), उ (तु), किंच (किञ्च), किंवा (किम्वा), किंतु (किन्तु), जदि, जइ (यदि), चेअ णोचेअ (चेत्, नोचेत्) जद्दपि (यद्यपि), तहावि (तथापि), किं (किम्), तणु (तनु), णु (नु) जाव (यावत्) ताव (तावत्), जदा (यदा), तदा (तदा), कदा (कदा), आम (आम), अद्धा, इं। इदि, त्ति (इति)।

अपि च, केचन अव्ययाः मनोविकारान् सूचयन्ति। यथा - "अव्वो" इति अव्ययपदेन दुःखसंभाषणापराध-विस्मयानन्दादरभयखेदविषादादिभावाः सूच्यन्ते। 'अव्वो सो एइ' इत्यत्र प्रियतमं प्रेत्यादरभावो प्रेमिकायाः अव्वो पदेन सूच्यते। अव्वो कट्ठं इत्यत्र दुःखमिति ज्ञेयम्।

"आ, हं" इति क्रोधसूचकौ "हंदि" इति विषादविकल्पश्चात्तापादिसूचकः; "वेव्वे" इति भयविषादवारण-बोधकः; "हु, खु" चेति द्वौ निश्चयवितर्कसंभावनाविस्मयबोधकौ "ऊ" इति गर्हाऽऽक्षेपविस्मयसूचनाद्योतकः; "अम्मो, अम्हो" इति आश्चर्यार्थकौ "रे, अरे, हरे" इति रतिकलहसूचकाः ; "हद्धी" इति निर्वेदद्योतकः इति मनोविकारसूचका अव्ययाः ज्ञातव्या भवन्ति प्राकृतवाङ्मये।

क्रियाविशेषणस्वरूपाश्चाव्ययाः बहवः सन्ति। अइ, अईव, अणंतरं, अवस्सं, अलं, अंतो, असरं, अण, अवरिं, एवं, कल्लं, इर, उं, कह, कहं, कालओ, झगिति, ण, णो, जइ, तए, तु, पच्छा, परं परंमुहं, परिता, पायोपाओ, मा, रहो, सज्जो, सम्मं, सह, सिय-सिआ, हंद, हेट्ठा, हिर, सहसा, सक्खं, सद्धिं इत्यादयः केचनेति।

निपाताः खलु प्राकृते बहुलायन्ते खलु यतो ये हि देश्यः देशजाः वा शब्दास्ते सर्वे हि निपाता एवाङ्गीकार्या ते पुनः निपातनादेव सिद्ध्यन्ति। तेषु केचन तत्राव्ययस्वरूपा अपि भवन्ति। यथा - इआणि, इआणिं, एण्हिं, एत्ताहे (इदानीम्), कहि (कुत्र), कुओ (कुतः), जत्थ (यत्र), जह जहा जहि (यथा), सव्वाओ (सर्वतः) सहासउत्तो (सहस्रकृत्वः) इत्यादि।

इत्यनेन विमर्शनेन सुस्पष्टं ज्ञायते यत्खलु संस्कृतप्राकृतभाषयोः तदुद्भूतवाङ्मये च परस्परं प्रगाढमन्तः सम्बन्धो दरीदृश्यते। व्याकरणशास्त्राणि खलु प्राकृतस्य नूनमेव संस्कृतव्याकरणोपजीवीनि ज्ञायन्ते तथापि तत्र स्वकीयं वैशिष्ट्यं परस्परं न खलु प्रतिस्पर्धते न वा प्रतिहन्ति। सर्वत्रोभयोः स्वरूपमहत्त्वादिकं महदायत एवेति शम्।

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

मानितविश्वविद्यालयः

(भारतशासनमानवसंसाधनविकासमन्त्रालयाधीनः)

56-57, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी

नवदेहली-110058